IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 1 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

एमपीएसई-005

(हिन्दी माध्यम)

FROM PREVIOUS YEAR PAPER's

IMPORTANT QUESTION ANSWER's

Guess Paper / Exam Notes

By India's No.1 - Mother Publication

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

खंड-I

10 अंकों के प्रश्न - प्रत्येक 400-500 शब्द

प्रश्न - अफ्रीका में इस्लाम के प्रसार पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- अफ्रीका में इस्लाम का प्रसार व्यापार, विजय और सांस्कृतिक अंतर्क्रियाओं से प्रभावित एक क्रमिक प्रक्रिया थी। अरब में धर्म के उदय के कुछ ही समय बाद, इस्लाम 7 वीं शताब्दी की शुरुआत में ही अफ्रीकी महाद्वीप में पहुँच गया था। अरब प्रायद्वीप से निकटता के कारण उत्तरी अफ्रीका इस्लाम से परिचित होने वाला पहला क्षेत्र था। अरब व्यापारियों और विजेताओं ने इस क्षेत्र में इस्लामी शिक्षाओं को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 8 वीं शताब्दी तक, वर्तमान मिस्र, लीबिया, ट्यूनीशिया, अल्जीरिया और मोरक्को सहित उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश भाग ने इस्लाम धर्म अपना लिया था। उत्तरी अफ्रीका के बर्बर लोग भी इस धर्म के महत्वपूर्ण समर्थक बन गए और बाद में उप-सहारा अफ्रीका में इसके प्रसार में योगदान दिया।

सहारा रेगिस्तान के पार व्यापार मार्गों ने पश्चिम अफ्रीका में इस्लाम के आगमन में सहायता की। मुस्लिम व्यापारी, विशेष रूप से माघरेब और बाद में सहेल क्षेत्र के, सोने, नमक और अन्य वस्तुओं के ट्रांस-सहारा व्यापार में लगे हुए थे। इन आदान-प्रदानों के माध्यम से, उन्होंने स्थानीय शासकों को प्रभावित किया, जिनमें से कई ने उत्तरी अफ्रीकी व्यापारियों के साथ राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए इस्लाम धर्म अपना लिया। घाना, माली और सोंगहाई जैसे प्रमुख साम्राज्यों ने धीरे-धीरे इस्लाम अपनाया, और माली के मनसा मूसा जैसे शासकों ने इस्लामी संस्कृति, शिक्षा और वास्तुकला को बढ़ावा दिया, जिसमें मस्जिदें और टिम्बकटू जैसे शिक्षा केंद्र शामिल थे।

पूर्वी अफ्रीका में, इस्लाम हिंद महासागर के पार समुद्री व्यापार के माध्यम से तटीय क्षेत्रों में फैला। अरब और फ़ारसी व्यापारियों ने मोगादिशु, किल्वा , मोम्बासा और ज़ांज़ीबार जैसे तटीय शहरों में बस्तियाँ स्थापित कीं। ये नगर-राज्य इस्लामी शिक्षा, वाणिज्य और संस्कृति के केंद्र बन गए। इस अंतर्क्रिया से स्वाहिली संस्कृति का उदय हुआ, जिसमें अफ़्रीकी और इस्लामी परंपराओं का मिश्रण था, जिसने इस क्षेत्र में इस्लाम के गहरे प्रभाव को उजागर किया।

अफ़्रीका में इस्लाम एकसमान रूप से नहीं थोपा गया; यह अक्सर स्थानीय मान्यताओं के साथ-साथ मौजूद रहा। कई अफ़्रीकी समुदायों ने इस्लामी सिद्धांतों को अपनी पारंपरिक प्रथाओं के साथ एकीकृत किया, जिसके परिणामस्वरूप धर्म का एक अनूठा और समन्वित रूप सामने

FOR MORE PDF 9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" ALL PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

आया। सूफ़ी संप्रदायों ने भी अपनी शिक्षाओं, मिशनरी गतिविधियों और धार्मिक संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, इस्लाम के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुल मिलाकर, अफ्रीका में इस्लाम का प्रसार केवल विजय के माध्यम से नहीं, बल्कि व्यापार, राजनीतिक गठबंधनों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा सुगम हुआ। इसके प्रभाव ने अफ्रीकी समाजों को नया रूप दिया, शहरों, शैक्षणिक संस्थानों और अंतरमहाद्वीपीय नेटवर्क के विकास में योगदान दिया, जिसने अफ्रीका को व्यापक इस्लामी दुनिया से जोड़ा।

प्रश्न - अफ्रीका में दास व्यापार पर चर्चा करें।

उत्तर- अफ्रीकी दास व्यापार, जिसे ट्रान्साटलांटिक दास व्यापार भी कहा जाता है, विश्व इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक था। इसमें मुख्यतः 16 वीं और 19 वीं शताब्दी के बीच लाखों अफ्रीकियों को जबरन पकड़कर ले जाया गया, और बेचा गया। अमेरिका में सस्ते श्रम की माँग से प्रेरित यूरोपीय शक्तियों ने इस व्यापार को स्थापित करने और बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

इस व्यापार की अफ्रीकी समाजों में गहरी जड़ें थीं। कुछ अफ्रीकी राज्यों और स्थानीय शासकों ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया, और प्रतिद्वंद्वी समुदायों या पड़ोसी क्षेत्रों के लोगों को पकड़कर यूरोपीय व्यापारियों को बेचा। पश्चिमी अफ्रीका में यूरोपीय लोगों ने तटीय किले और व्यापारिक चौकियाँ स्थापित कीं, जो गुलाम लोगों के संग्रह केंद्रों के रूप में काम करती थीं। गुलामों के बदले में दी जाने वाली वस्तुओं में आग्नेयास्त्र, वस्त्र, शराब और अन्य निर्मित वस्तुएँ शामिल थीं।

मध्य मार्ग, अफ्रीका से अमेरिका तक की यात्रा, अपनी अमानवीय परिस्थितियों के लिए कुख्यात थी। बंदियों को कम हवा, अपर्याप्त भोजन और न्यूनतम स्वच्छता वाले जहाजों में ठूँस-ठूँस कर भरा जाता था। मृत्यु दर बहुत अधिक थी, कई लोग यात्रा के दौरान बीमारी, भुखमरी या दुर्व्यवहार से मर जाते थे। बचे हुए लोगों को अमेरिका भर के बागानों, खदानों और घरों में जीवन भर जबरन मजदूरी करनी पड़ती थी।

अफ्रीका में दास व्यापार के सामाजिक और आर्थिक परिणाम विनाशकारी थे। इससे जनसंख्या में गिरावट आई, समुदायों में बिखराव हुआ और दासों को पकड़ने के लिए युद्धों और छापों में वृद्धि के कारण राजनीतिक अस्थिरता पैदा हुई। कृषि और हस्तशिल्प उत्पादन में गिरावट के कारण पारंपरिक अर्थव्यवस्थाओं को नुकसान हुआ, जबकि दासों की यूरोपीय मांग ने बाहरी व्यापार पर निर्भरता को बढ़ावा दिया। कई क्षेत्रों का सामाजिक ताना-बाना बदल गया, जिससे युवा और कामकाजी आबादी का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो गया और सामाजिक विकास प्रभावित हुआ।

18 वीं और 19 वीं शताब्दी में दास उन्मूलन आंदोलन ने धीरे-धीरे ट्रान्साटलांटिक दास व्यापार को समाप्त कर दिया। ब्रिटेन और उसके बाद अन्य यूरोपीय देशों ने इस व्यापार पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून पारित किए, हालाँकि अवैध व्यापार कुछ समय तक जारी रहा। दास व्यापार की विरासत आज भी गहरी है, जिसने अफ्रीका में दीर्घकालिक आर्थिक चुनौतियों और सामाजिक असमानताओं को जन्म दिया है और अफ्रीकी प्रवासियों की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को आकार दिया है।

निष्कर्षतः, अफ्रीकी दास व्यापार शोषण की एक ऐसी व्यवस्था थी जिसने भारी मानवीय पीड़ा पैदा की और अफ्रीकी समाजों को तहस-नहस कर दिया। इसका प्रभाव न केवल जनसांख्यिकीय और आर्थिक था, बल्कि गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक भी था, जिसने अफ्रीका और दुनिया के इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी।

FOR MORE PDF-9485943709

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT -
HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST
ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905
OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - अफ्रीका में राष्ट्रवाद के उदय का पता लगाएं।

उत्तर- अफ्रीका में राष्ट्रवाद का उदय 20 वीं सदी के दौरान एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक घटनाक्रम था, जो औपनिवेशिक शासन से मुक्ति, सामाजिक समानता और आर्थिक विकास की इच्छा से प्रेरित था। अफ्रीकी राष्ट्रवाद यूरोपीय साम्राज्यवाद के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

उभरा, जिसने 19 वीं सदी के उत्तरार्ध से इस महाद्वीप पर अपना दबदबा बनाए रखा था। औपनिवेशिक शक्तियों ने अफ़्रीका के संसाधनों का दोहन किया, विदेशी शासन व्यवस्थाएँ थोपीं और स्वदेशी संस्कृतियों को हाशिए पर धकेला, जिससे अफ़्रीकी लोगों में व्यापक आक्रोश पैदा हुआ।
अफ़्रीकी राष्ट्रवाद की नींव 20 वीं सदी के शुरुआती वर्षों में पड़ी, जब शिक्षित अफ़्रीकी, जो अक्सर लोकतंत्र और आत्मनिर्णय के पश्चिमी विचारों से परिचित थे, राजनीतिक और सामाजिक सुधारों की वकालत करने लगे। इन शुरुआती नेताओं ने औपनिवेशिक अन्याय के विरुद्ध जागरूकता बढ़ाने के लिए संघ, यूनियन और आंदोलन बनाए। दक्षिण अफ़्रीका में 1912 में स्थापित अफ़्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (ANC) जैसे संगठनों ने लोगों को राजनीतिक अधिकारों और समानता के लिए संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध ने अफ्रीका में राष्ट्रवाद के उदय को तेज़ी से बढ़ाया। कई अफ़्रीकी युद्धों में शामिल हुए, और विदेशों में स्वतंत्रता और स्वशासन के विचारों से उनके संपर्क ने देश में राजनीतिक अधिकारों की उनकी माँग को और मज़बूत किया। औपनिवेशिक प्रशासन के तहत आर्थिक कठिनाइयों और भेदभावपूर्ण नीतियों ने असंतोष को और बढ़ा दिया। युद्धों के बीच की अवधि के दौरान, घाना में क्वामे नक्रूमा, केन्या में जोमो केन्याटा और कांगो में पैट्रिस लुमुम्बा जैसे राष्ट्रवादी नेताओं ने स्वशासन की माँग और औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देने वाले जन आंदोलन संगठित करना शुरू कर दिया।
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दौर में राष्ट्रवादी गतिविधियों में तेज़ी देखी गई। राजनीतिक दलों, ट्रेड यूनियनों और युवा आंदोलनों का गठन, जनता को संगठित करने की एक आम रणनीति बन गई। वेब डू बोइस और मार्कस गार्वे जैसे लोगों द्वारा समर्थित पैन- अफ्रीकनवाद ने वैचारिक समर्थन प्रदान किया, अफ्रीकी राष्ट्रों के बीच एकता और औपनिवेशिक शासन से सामूहिक मुक्ति पर ज़ोर दिया। राष्ट्रवादी आंदोलनों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए राजनीतिक संघर्ष, जन विरोध और कुछ मामलों में सशस्त्र प्रतिरोध को एक साथ जोड़ा।
1950 और 1960 के दशक तक, अफ्रीकी राष्ट्रवाद अपने चरम पर पहुँच गया क्योंकि देशों को स्वतंत्रता मिलने लगी। घाना, 1957 में क्वामे नक्रूमा के नेतृत्व में स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला पहला उप-सहारा अफ्रीकी देश बना, जिसने अन्य उपनिवेशों को अपनी मुक्ति के प्रयासों को तेज़ करने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रवाद के उदय ने अंततः अफ्रीका के राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया, जिससे औपनिवेशिक साम्राज्यों का विघटन हुआ और संप्रभु राष्ट्रों का निर्माण हुआ, हालाँकि स्वतंत्रता के बाद भी इस महाद्वीप को राष्ट्र-निर्माण और सामाजिक एकीकरण में चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
संक्षेप में, अफ्रीकी राष्ट्रवाद औपनिवेशिक उत्पीड़न, शिक्षित नेतृत्व, वैश्विक प्रभावों और व्यापक सामाजिक और आर्थिक शिकायतों से उभरा, और अंततः एक शक्तिशाली शक्ति बन गया जिसने 20 वीं सदी में अफ्रीका के इतिहास को नया रूप दिया।

प्रश्न - अफ्रीका में राज्य की प्रकृति का परीक्षण करें।

उत्तर- अफ़्रीका में राज्य की प्रकृति एक जटिल और बहुआयामी विषय है जो ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित है। अफ़्रीकी राज्य मुख्यतः औपनिवेशिक अनुभवों से उभरे हैं, जिसने उनकी राजनीतिक संरचनाओं, शासन और सामाजिक संगठन पर गहरी छाप छोड़ी है। अधिकांश अफ़्रीकी देशों को 20 वीं सदी के मध्य में स्वतंत्रता प्राप्त हुई, लेकिन औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा स्थापित सीमाओं और संस्थाओं में अक्सर जातीय, भाषाई और सांस्कृतिक वास्तविकताओं की अनदेखी की गई। इस विरासत ने आज अफ़्रीकी राज्यों की अनूठी प्रकृति में योगदान दिया है।
अफ़्रीकी राज्यों की एक प्रमुख विशेषता राजनीतिक और आर्थिक जीवन में राज्य की मज़बूत उपस्थिति है, जो अक्सर केंद्रीकृत सत्ता की विशेषता होती है। कई अफ़्रीकी राज्य औपचारिक रूप से संप्रभु हैं, फिर भी उन्हें अपने क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, खासकर विविध जातीय समूहों वाले क्षेत्रों या संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में। कमज़ोर राज्य क्षमता, सीमित बुनियादी ढाँचा और विदेशी सहायता पर निर्भरता ने भी शासन के स्वरूप को आकार दिया है, जिससे राज्य की कार्यप्रणाली का एक संकर रूप सामने आया है जहाँ औपचारिक संस्थाएँ अनौपचारिक और पारंपरिक प्रणालियों के साथ सह-अस्तित्व में हैं।
अफ़्रीकी राज्य अक्सर वैधता के लिए संघर्ष करते हैं। हालाँकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्हें संप्रभु संस्थाओं के रूप में मान्यता प्राप्त है, लेकिन घरेलू स्तर पर उन्हें कभी-कभी विविध आबादी का प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जातीय विभाजन, ऐतिहासिक शिकायतें और असमान विकास ऐसे तनावों को बढ़ावा देते हैं जो राज्य के अधिकार और कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं। इसके कारण कभी-कभी अधिनायकवाद, सैन्य तख्तापलट या राजनीतिक अस्थिरता की लंबी अवधि होती है, क्योंकि नेता सत्ता को मजबूत करने और खंडित समाजों पर नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

FOR MORE PDF 9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

आर्थिक रूप से, अफ़्रीकी राज्य विविध क्षमताएँ प्रदर्शित करते हैं। कुछ ने विकास को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक संसाधनों और रणनीतिक नीतियों का लाभ उठाया है, जबकि अन्य भ्रष्टाचार, संसाधनों पर निर्भरता और आर्थिक कुप्रबंधन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। आर्थिक नियोजन, विनियमन और पुनर्वितरण में राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है, जो विकास संबंधी महत्वाकांक्षाओं और वैश्विक आर्थिक संरचनाओं द्वारा लगाई गई बाधाओं, दोनों को दर्शाती है।

अंततः, अफ़्रीकी राज्य अक्सर वैश्विक परस्पर निर्भरता के संदर्भ में कार्य करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय संगठन, विदेशी सरकारें और बहुराष्ट्रीय निगम घरेलू नीतियों को प्रभावित करते हैं, और राज्यत्व की प्रकृति को और अधिक आकार देते हैं। घरेलू चुनौतियों, ऐतिहासिक विरासतों और बाहरी दबावों का अंतर्संबंध अफ़्रीकी राज्य को एक गतिशील और विकासशील इकाई बनाता है, जो अक्सर औपचारिक संप्रभुता और व्यावहारिक सीमाओं के बीच संतुलन बनाता है।

निष्कर्षतः, अफ्रीकी राज्य औपनिवेशिक इतिहास, जातीय विविधता और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का परिणाम है। इसकी प्रकृति केंद्रीकृत सत्ता, वैधता के संघर्ष, विविध विकासात्मक क्षमताओं और अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों के महत्वपूर्ण प्रभाव से परिभाषित होती है। अफ्रीकी राज्यों को समझने के लिए औपचारिक राजनीतिक संरचनाओं और महाद्वीप पर शासन को आकार देने वाली अनौपचारिक गतिशीलता, दोनों पर ध्यान देना आवश्यक है।

प्रश्न - अफ्रीका में विकास पर विस्तार से बताएं।

उत्तर- अफ्रीका एक विशाल और विविध महाद्वीप है जिसने पिछले कई दशकों में महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन देखे हैं। अफ्रीका की विकास प्रक्रिया को उसके आर्थिक विकास पैटर्न, राजनीतिक परिवर्तनों, बुनियादी ढाँचे की प्रगति और उसकी वर्तमान दिशा को आकार देने वाली चुनौतियों का अध्ययन करके समझा जा सकता है। हालाँकि अफ्रीका अभी भी गरीबी, संघर्ष और सीमित औद्योगीकरण जैसी संरचनात्मक कठिनाइयों का सामना कर रहा है, फिर भी स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और क्षेत्रीय सहयोग में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं।

आर्थिक रूप से, अफ्रीका ने मिश्रित लेकिन उत्साहजनक रुझान प्रदर्शित किए हैं। कई अफ्रीकी देशों ने तेल, खनिज और कृषि उत्पादों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के कारण स्थिर सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि का अनुभव किया है। नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, केन्या और इथियोपिया जैसे देश इस क्षेत्र में प्रमुख आर्थिक शक्ति बनकर उभरे हैं। औद्योगिक विस्तार, लघु एवं मध्यम उद्यमों का विकास और डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं का उदय भी आर्थिक विविधीकरण में योगदान दे रहे हैं। हालाँकि, कच्चे माल के निर्यात पर भारी निर्भरता अभी भी कई अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक बाजार में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बनाती है। अफ्रीकी संघ (एयू) और अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र (एएफसीएफटीए) जैसी संस्थाओं के माध्यम से आर्थिक एकीकरण के प्रयासों का उद्देश्य अंतर-क्षेत्रीय व्यापार को मजबूत करना और बाहरी निर्भरता को कम करना है।

सामाजिक विकास के संदर्भ में, अफ्रीका ने साक्षरता दर, स्कूल नामांकन और स्वास्थ्य सेवा की पहुँच में प्रगति देखी है। अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पहलों ने बाल मृत्यु दर में कमी, संक्रामक रोगों से निपटने और मातृ स्वास्थ्य में सुधार लाने में योगदान दिया है। कई अफ्रीकी सरकारें कौशल विकास और युवा सशक्तिकरण में भी निवेश कर रही हैं। इन सुधारों के बावजूद, बेरोजगारी, लैंगिक असमानता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। जनसंख्या वृद्धि दुनिया में सबसे तेज़ वृद्धि दर में से एक बनी हुई है, जिससे सामाजिक बुनियादी ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव पड़ रहा है।

अफ्रीका में राजनीतिक विकास की विशेषता सत्तावादी शासन से लोकतांत्रिक शासन की ओर क्रमिक बदलाव रही है। कई देशों ने बहुदलीय व्यवस्था अपनाई है, प्रतिस्पर्धी चुनाव कराए हैं और लोकतांत्रिक संस्थाओं को मज़बूत करने की दिशा में काम किया है। हालाँकि, राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार और कभी-कभार सैन्य तख्तापलट अभी भी कुछ क्षेत्रों में सुशासन में बाधा डालते हैं। साहेल और हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका जैसे क्षेत्रों में संघर्ष स्थिरता को प्रभावित करते हैं और विकास प्रयासों को बाधित करते हैं।

परिवहन नेटवर्क, ऊर्जा उत्पादन और दूरसंचार में निवेश के साथ, बुनियादी ढाँचे के विकास में भी तेज़ी आई है। मोबाइल तकनीक के विस्तार ने संचार, बैंकिंग और व्यापार में क्रांति ला दी है। चीन की बेल्ट एंड रोड परियोजनाओं जैसी पहलों ने सड़कों, बंदरगाहों और रेलवे के निर्माण में तेज़ी ला दी है। फिर भी, ग्रामीण-शहरी असमानताएँ और दूरदराज के इलाकों में अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

निष्कर्षतः, अफ्रीका में विकास एक गतिशील प्रक्रिया है जो महत्वपूर्ण उपलब्धियों और निरंतर बाधाओं से भरी है। जहाँ आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और राजनीतिक सुधार आशाजनक प्रतीत होते हैं, वहीं अफ्रीका का भविष्य का विकास शासन, क्षेत्रीय सहयोग, तकनीकी नवाचार और समावेशी विकास के निरंतर प्रयासों पर निर्भर करता है।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources